महाकवि कालिदास का प्रकृति चित्रण

M.A. – IV Semester

- Dr. UMA SHARMA

Head Of Department, SANSKRIT
N.A.S Degree College, Meerut

महाकवि कालिदास का प्रकृति चित्रण

×

महाकवि कालिदास संसार के ऐसे सूर्य है कि जिनकी ~~आभा~~ आभा चतुर्दिक बिखर रही है चाहे वह सामाजिक चित्रण, राजकाज, राजव्यवस्था आश्रम व्यवस्था या फिर आदर्श हो सबमें इन्होंने अद्वितीय सफलता अर्जित की है।- इसके अतिरिक्त प्रकृतिचित्रण में आप ने जो परमोत्कर्ष को प्राप्त किया है शायद ही अन्य कोई कवि होगा जो वहाँ तक पहुँच पाये, सच तो यह है कि आपके नजदीक पहुँचने की तो दूर, दूर दूर तक को कवि नही दिखाई पड़ता इसीलिए तो कहा गया है कि -

पुराकवीनांगणना प्रसङ्गे कनिष्ठिकाधिष्ठित कविकालिदासः
अद्यापि तत्तुल्य~~कविस~~ कवेरभावादनामिका सार्थवती बभूव॥

कालिदास प्रकृति के परमोपासक पुरोधा हैं उनकी काव्य-कलात्मक ज्योति ने सूक्ष्म तत्वों को प्रचुरता से देखा है उनके प्राकृतिक चित्रण - चित्रसदृश सजीव चित्रित होने लगते हैं - हिमालय पर्वत, नदी निर्झर, गुहा, कानन, सागर सूर्योदय, सूर्यास्त, चन्द्रिकाधौत रजनी आदि प्राकृतिक दृश्यों का जैसा हृदयग्राही वर्णन उन्होने किया है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है जगत्पावन तीर्थराज प्रयाग में गङ्गा और यमुना का जैसा 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' वर्णन महाकवि ने किया है, वैसा वर्णन शायद ही किसी साहित्य में उपलब्ध होगा। देखिए -

क्वचित्प्रभालेपिभिरिन्द्रनीलैर्मुक्तामयी यष्टिरिवानुविद्धा।
अन्यत्र माला सितपङ्कजानामिन्दीवरैरुत्खचितान्तरेव॥
क्वचित्खगानां प्रियमानसानां कादम्बसंसर्गवतीव पंक्तिः।
अन्यत्र कालागुरुदत्तपत्रा भक्तिर्भुवश्चन्दनकल्पितेव॥

क्वचित्प्रभा चान्द्रमसी तमोभिश्छायाविलीनैः शबलीकृतेव।
अन्यत्र शुभ्रा शरदभ्रलेखा रन्ध्रेष्विवालक्ष्यनभः प्रदेशा॥
क्वचिच्च कृष्णोरगभूषणेव भस्माङ्गरागा तनुरीश्वरस्य।
पश्यानवद्याङ्गि विभाति गङ्गा भिन्नप्रवाहा यमुना तरङ्गैः॥

रघु॰ 13, 54-57

यमुना की सांवली लहरों से मिली हुई उजली लहरों वाली गङ्गा जो कहीं तो चमकने वाली इन्द्रनील मणियों से गुँथी हुई माला जैसी लगती है, कहीं नीले और श्वेत कमलों की मिली हुई माला जैसी दिखाई पड़ रही है। कहीं सांवले रंग के हंसों से मिले हुये शुभ्र रंग के राजहंसों की पंक्ति के समान शोभा दे रही है, कहीं श्वेत चन्दन से तथा कहीं पर सांवले रंग के चन्दन से खचित सुन्दर दिखाई पड़ रही है शरीर रूपी पृथ्वी पर। कहीं कहीं ये वृक्ष के नीचे की उस चाँदनी के ~~समान~~ समान लगती हैं जिसके बीचोंबीच में पत्तों की छाया पड़ी हो और कहीं पर शरद् ऋतु के उन उजले बादलों के समान जान पड़ती हैं जिनके बीचो बीच में नीला आकाश झांक रहा हो। और कहीं पर भस्म रमाये हुये शिव जी के उस शरीर के समान दिखाई पड़ रही है जिस पर काले-काले सर्प लिपटे हुये हों।

कालिदास की अद्भुत प्रकृति प्रेक्षण शक्ति का एक सुरम्य मनमोहक चित्रण अभिज्ञान० के प्रथम अंक में —

नीवाराः शुकगर्भकोटरमुखभ्रष्टास्तरूणामधः
प्रस्निग्धाः क्वचिदिङ्गुदीफलभिदः सूच्यन्त एवोपलाः।
विश्वासोपगमादभिन्नगतयः शब्दं सहन्ते मृगा—
स्तोयाधारपथाश्च वल्कलशिखानिष्यन्दरेखाङ्किताः॥

अभि॰ 1/14

कहीं तो वृक्षों के तले तोतों के घोसलों से गिरे हुये तिन्नी के दाने बिखरे पड़े हैं कहीं इधर-उधर पड़े हुये चिकने पत्थर बता रहे हैं कि इन पर हिंगोट के फल कूटे गये हैं, कहीं निडर खड़े हुये मृग इस विश्वास से रथ का शब्द सुन रहे हैं कि आश्रम में कोई हमें छेड़ेगा नहीं और कहीं नदी तालाबों पर आने जाने के मार्गों में मुनियों के वल्कलों से टपके हुये जल की रेखाएं बनी हुई हैं। यहाँ समुचित वर्णन से आश्रम का वास्तविक दृश्य आँखों के सामने झूलने लगता है।

रघुवंश के नवम सर्ग में महाकवि ने वसन्त का बड़ा हृदयावर्जक वर्णन किया है। पवन से हिलाई गई ~~लता लता~~ लता कैसे नाच रही है :

श्रुति सुख भ्रमरस्वन गीतयः कुसुमकोमल दन्तरुचो बभुः।
उपवनान्तलताः पवनाहतैः किसलयैः सलयैरिव पाणिभिः॥
रघु 9/35

वन के किनारे बढ़ी हुई लताएं ऐसी सजीव सी जान पड़ती थीं मानों कानों को सुख देने वाली भौंरों की गुंजार ही उनके गीत हों। खिले हुए कोमल फूल ही उनकी हँसी के दाँत हों और वायु से हिली हुई शाखाओं वाले हाथों से वे अनेक प्रकार के हाव-भाव दिखा रही हों। यहां लता तथा नर्तकी का साम्य कितना सुन्दर है।

कुमारसंभव के आठवें सर्ग में संध्याकाल का विशाक्षणि प्रेक्षणीय है – सीकरव्यतिकरं मरीचिभिर्दूरयत्यवनते विवस्वति।
इन्द्रचापपरिवेषशून्यतां निर्झरास्तव पितुर्व्रजन्त्यमी॥
कुमार० 8/31

ज्यों ज्यों दिन ढलता जाता है त्यों त्यों सूर्य की किरणें हिमालय के झरनों की फुहारों से हटती जाती हैं और उनके हटते ही उन फुहारों में बने हुये इन्द्रधनुष भी छिपते जा रहे हैं।

अभिज्ञान शाकुन्तल में प्रकृति का वर्णन अत्यन्त हृदयग्राही और सूक्ष्म है प्रकृति का केवल पृष्ठभूमि ही नहीं अपितु इसका अपना एक विशिष्ट स्थान है क्योंकि यह नाटक के अनिवार्य अङ्ग के रूप में चित्रित हुई है। नाटक में प्रकृति एवं जड़ पदार्थों का मानवीकरण बड़े ही सुन्दर ढंग से हुआ है। पशु-पक्षी एवं तपोवन के वृक्ष-लता भी मानवीय वेदनाओं के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं। इस प्रकरण में चतुर्थ अङ्क में वर्णित शकुन्तला की विदाई का दृश्य किसके मन को न हर लेगा। शकुन्तला के पतिगृह जाने के समय महर्षि कण्व तपोवन के वृक्षों और लताओं को सम्बोधित करते हुये कहते हैं कि

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनापि भवतां स्नेहेन या पल्लवम् ।
आद्ये वः कुसुमप्रसूति समये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम् ॥ अभि० 4/9

अचेतन प्राणियों के प्रति चेतन मानव की आत्मीयता का यह सुन्दर उदाहरण है इस विदाई के करुणापूर्ण क्षणों में तपोवन की व्याकुलता का एक चित्र दर्शनीय है—

उद्गलितदर्भकवला मृगाः परित्यक्तनर्तना मयूराः ।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः ॥ अ० 4/12

~~आश्रम से विदा लेते हुये एक ओर अन्त में शकुन्तला~~
कण्व के शिष्य द्वारा प्रातः काल का वर्णन इन शब्दों में किया गया है—

यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीनां
आविष्कृतारुणपुरःसर एकतोऽर्कः ।

तनयमचिरात् प्राचीनार्कं प्रसूय च पावनं
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि।
शा० 4/19

यहाँ पर जिस भरत के नाम पर यह विशाल देश भारत कहलायेगा उस पुत्र की उत्पत्ति के लिए 'प्राचीनार्कं प्रसूय' इस औपम्य विधान में कितना विराट् तत्त्व छिपा हुआ है? इसी प्रकार-

"अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव" इत्यादि स्थलों में भी कालिदास की अनुभूति की विशालता के दर्शन होते हैं।

~~शकुन्तला में~~ उपमा सौन्दर्य के अन्य स्थल -

कालिदास के काव्यों में उपमा के एक से एक बढ़कर आकर्षक चित्र अंकित हैं उनमें से उपमा सम्बन्धी कुछ चित्ताकर्षक स्थल द्रष्टव्य हैं-

शाकुन्तल के चतुर्थ अंक में कण्वद्वारा पति-गृह जाने वाली धर्मपुत्री शकुन्तला की उपमा शर्मिष्ठा से तथा भावी पुत्र की उपमा पुरु से की गई है, जो अत्यन्त स्पृहणीय है -

ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि। शा० 4/07

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थ --- पार्वती परमेश्वरौ
रघु० 01/01

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि महाकवि कालिदास, उपमासम्राट् कालिदास, दीपशिखा कालिदास उपमा के लिए जगतवन्दनीय हैं। अतः कहा गया है:-

उपमाकालिदासस्य भारवेरर्थगौरवं दण्डिनः पदलालित्यं
माघे सन्ति त्रयो गुणाः॥